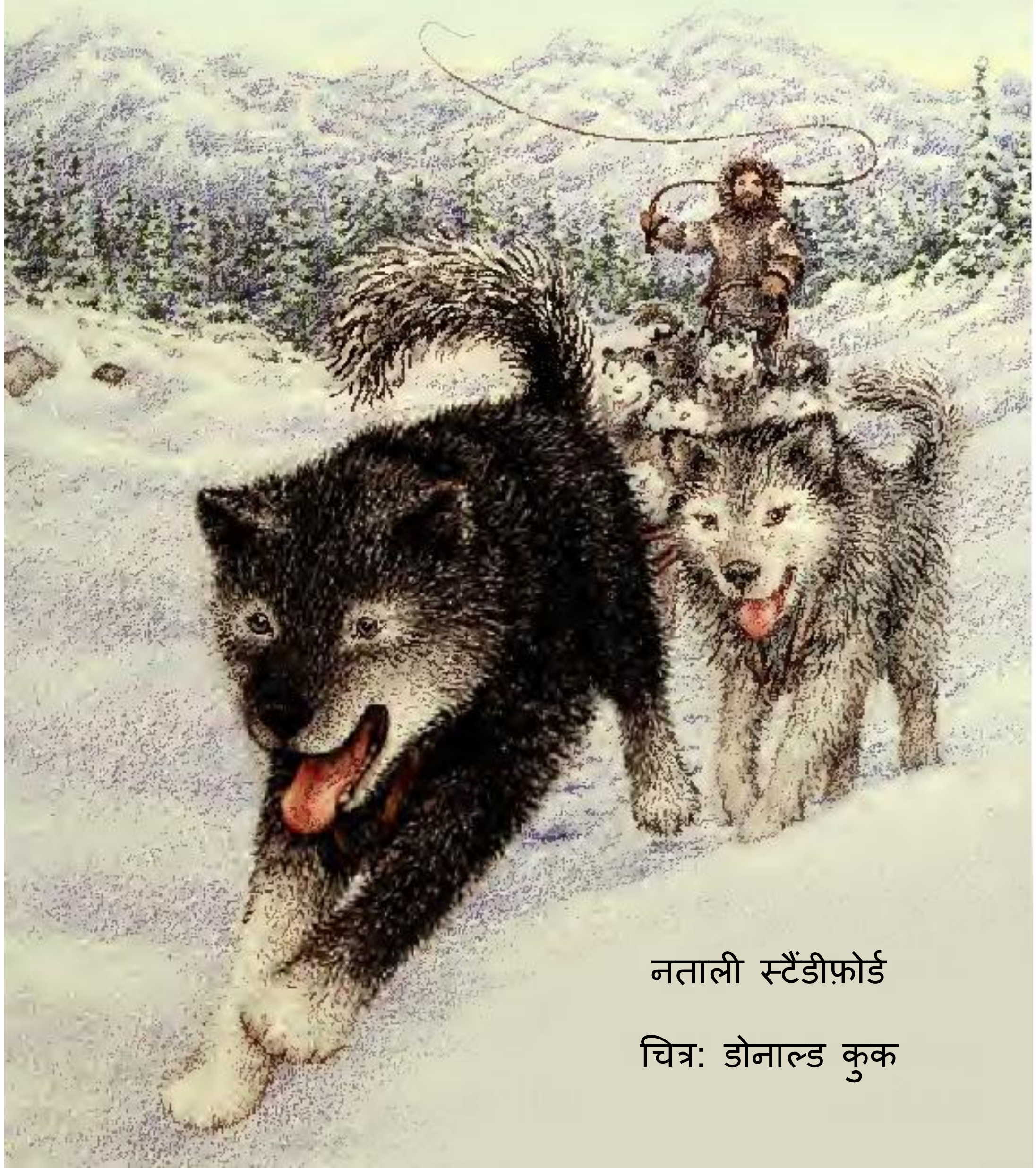
दुनिया का सबसे बहादुर कुत्ता

बाल्टो की सच्ची कहानी



नताली स्टैंडीफ़ोर्ड

चित्र: डोनाल्ड कुक



दुनिया का सबसे बहादुर कुत्ता

बाल्टो की सच्ची कहानी

नताली स्टैंडीफ़ोर्ड

चित्र: डोनाल्ड कुक







यह एक बहुत बहादुर कुत्ते की सच्ची कहानी है.

उसका नाम बाल्टो था.

साल 1925 था.

बाल्टो नोम, अलास्का में रहता था.

नोम एक सीमावर्ती शहर था.

साल के ज़्यादातर समय वो बर्फ़ के नीचे दबा रहता था.

सर्दियों में वहां इतनी बर्फ़ होती थी

कि यात्रा करने का कोई रास्ता नहीं बचता था.

न विमान से, न ट्रेन से,

न नाव से और न ही कार से.

अलास्का में यात्रा करने का एकमात्र साधन

कुत्तों से खींची जाने वाली स्लेज थी.



बाल्टो एक स्लेज कुत्ता था.

वो नोम से कुछ दूर

एक सोने की खदान कंपनी में

काम करता था.

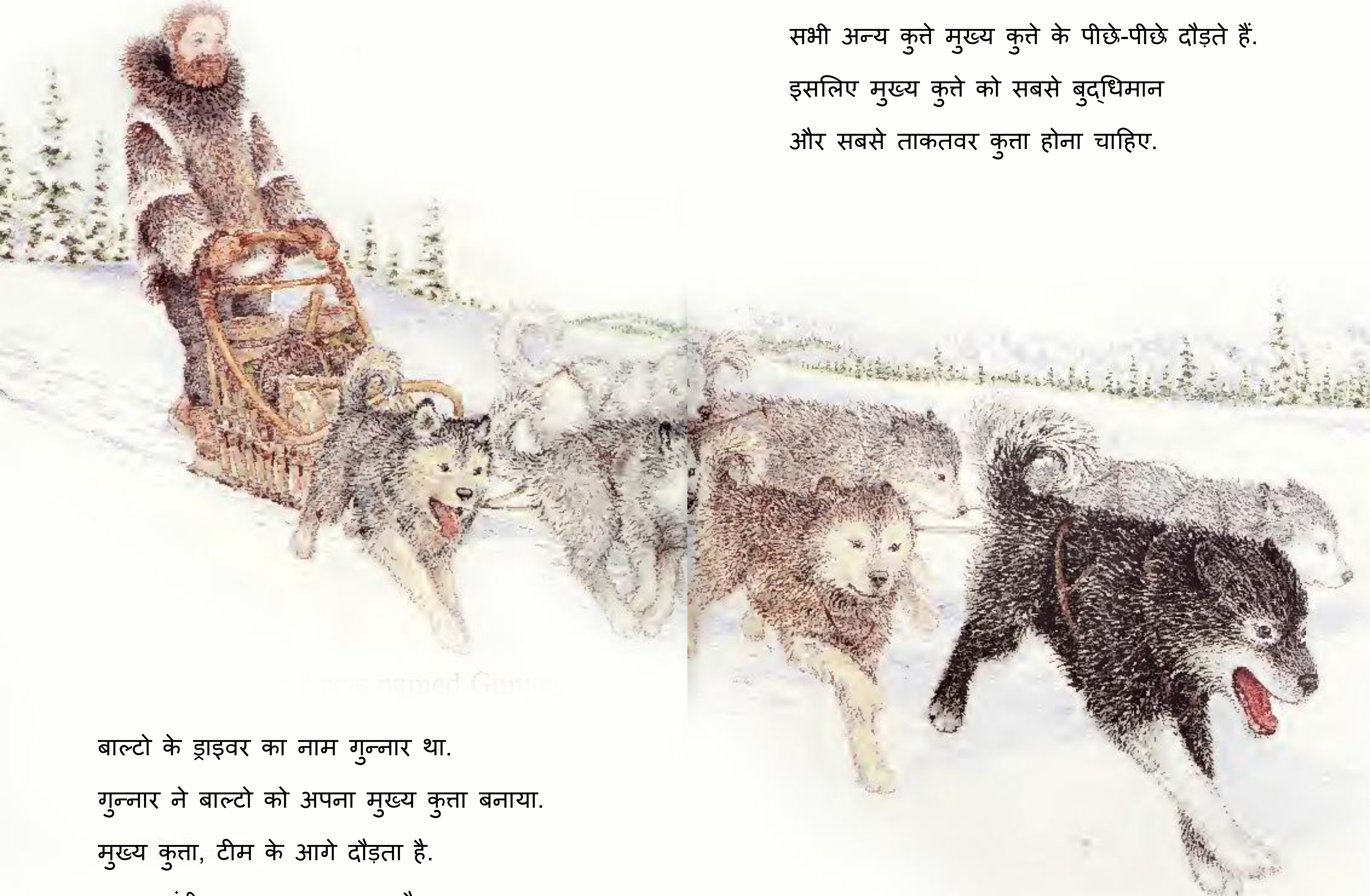
वह खनिकों तक खाना

और औज़ार पहुँचाने में मदद करता था.

एक स्लेज कुत्ते के लिए

वो एक अच्छी ज़िंदगी थी.





बाल्टो के ड्राइवर का नाम गुन्नार था.

गुन्नार ने बाल्टो को अपना मुख्य कुत्ता बनाया.

मुख्य कुत्ता, टीम के आगे दौड़ता है.

वह पगडंडी का अनुसरण करता है.

सभी अन्य कुत्ते मुख्य कुत्ते के पीछे-पीछे दौड़ते हैं.

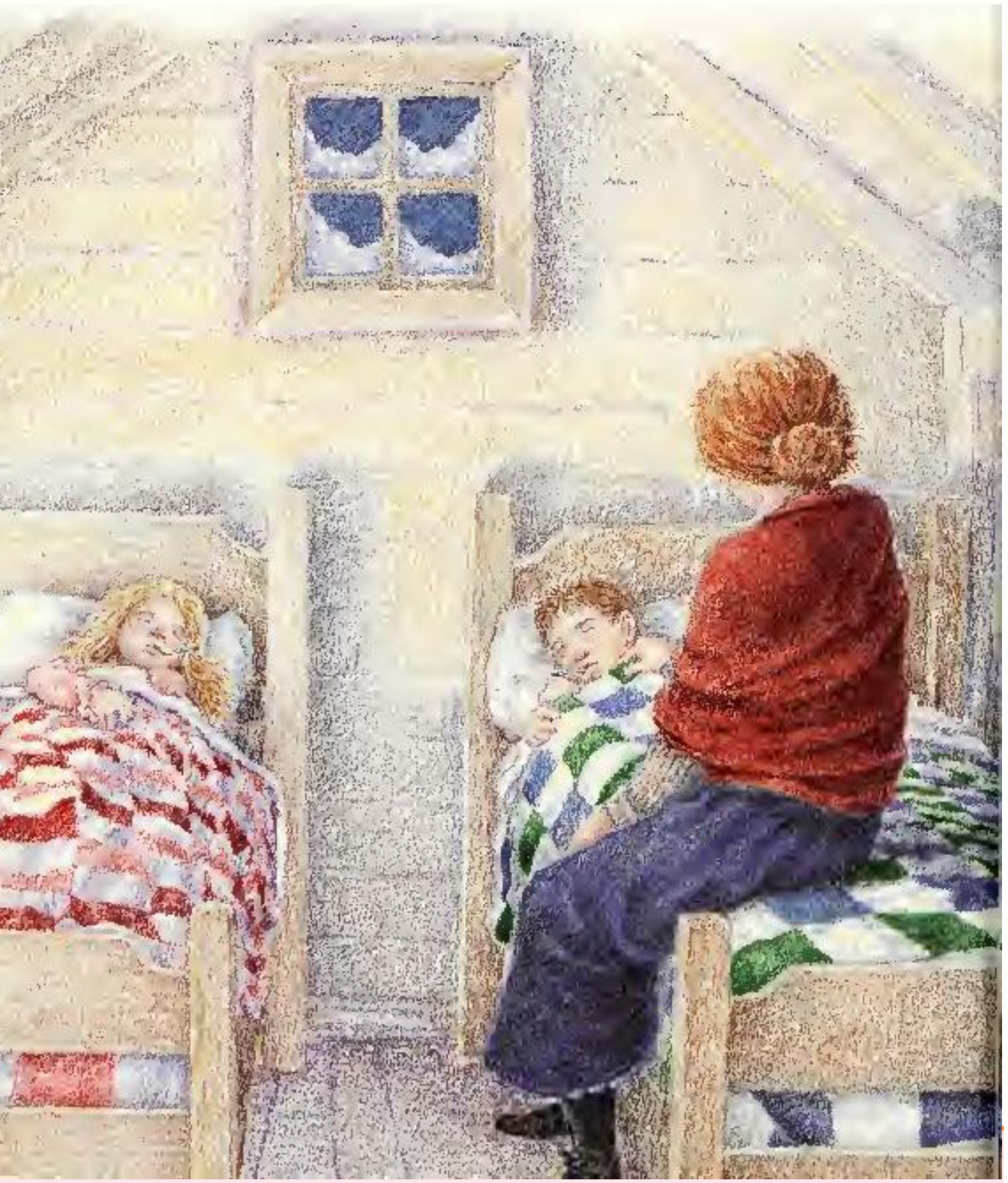
इसलिए मुख्य कुत्ते को सबसे बुद्धिमान

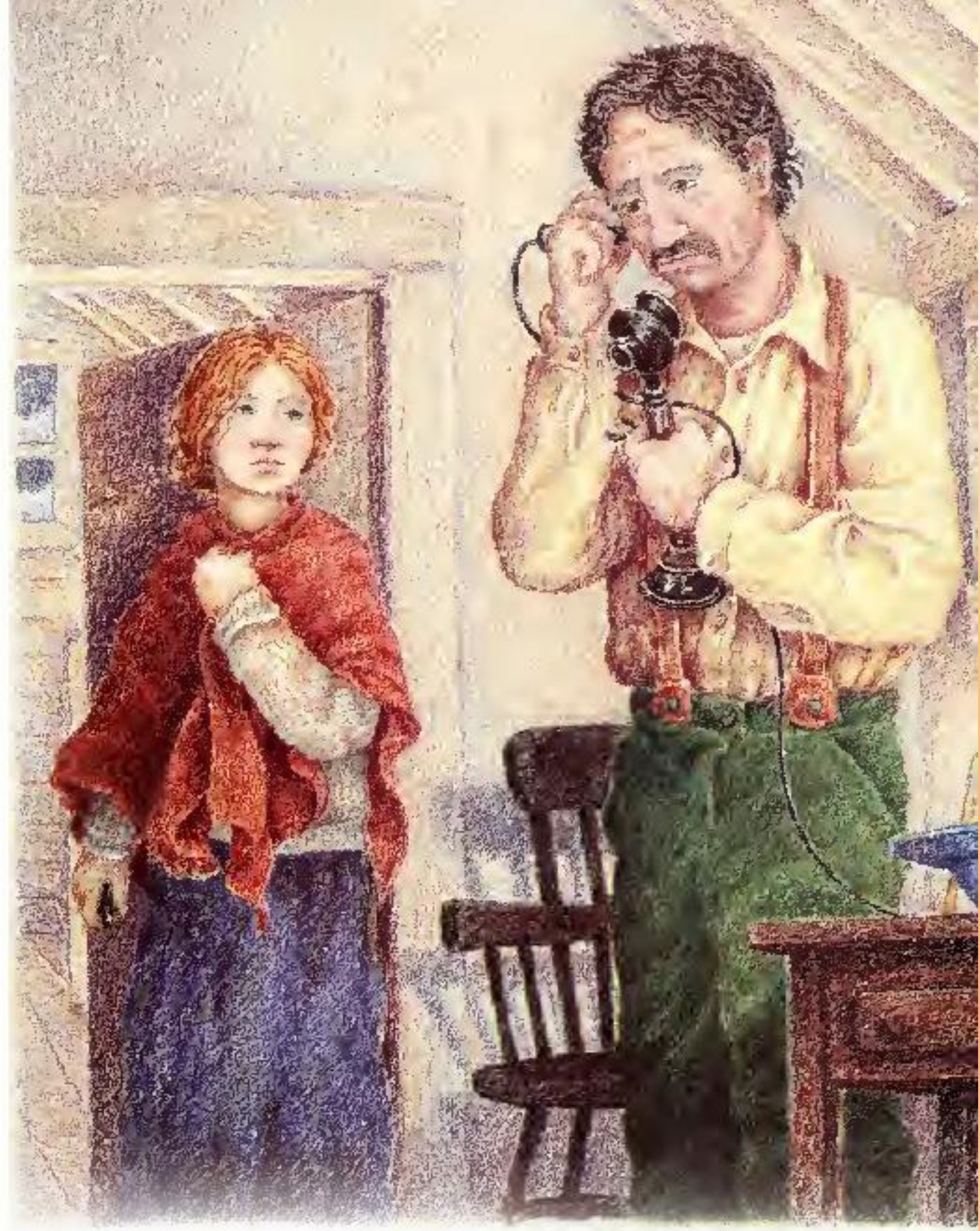
और सबसे ताकतवर कुत्ता होना चाहिए.

ठंडी सर्दियों में एक दिन

नोम में एक भयानक घटना घटी.

दो बच्चे बहुत बीमार हो गए.





बच्चों के माता-पिता ने डॉक्टर को बुलाया.

वह पूरे शहर में एकमात्र डॉक्टर था.

जब डॉक्टर ने बच्चों को देखा

तो वह बहुत चिंतित हुए.

बच्चे एक बहुत भयानक बीमारी

डिप्थीरिया से पीड़ित थे.

डॉक्टर के पास उस रोग की दवा नहीं थी.

दवा के बिना बच्चे मर जाते.

दवा के बिना नोम में कई अन्य लोग भी

डिप्थीरिया से पीड़ित होकर मर जाते.

डॉक्टर जानते थे कि मरीज़ों को

जल्दी से कोई दवा लेनी होगी.





अलास्का के एंकोरेज अस्पताल में

वो दवा उपलब्ध थी.

लेकिन एंकोरेज 800 मील दूर था.

एंकोरेज के डॉक्टरों ने

दवा को ट्रेन में रख दिया.

लेकिन ट्रेन जल्द ही गहरी बर्फ में फंस गई.

नोम से ट्रेन अभी भी 700 मील दूर थी!

नोम के लोगों ने एक बैठक बुलाई.

हर कोई बहुत डरा हुआ था.

"अब हम क्या करेंगे?“ डॉक्टर ने पूछा.

"मरीज़ों को वो दवा ज़रूर चाहिए."

आखिर में किसी ने कहा,

"कुत्तों की स्लेज रिले से वो काम बन सकता है.

रिले में जब कुत्तों की एक टीम थक जाती है,

तो एक नई टीम काम

संभालने के लिए तैयार होती है."

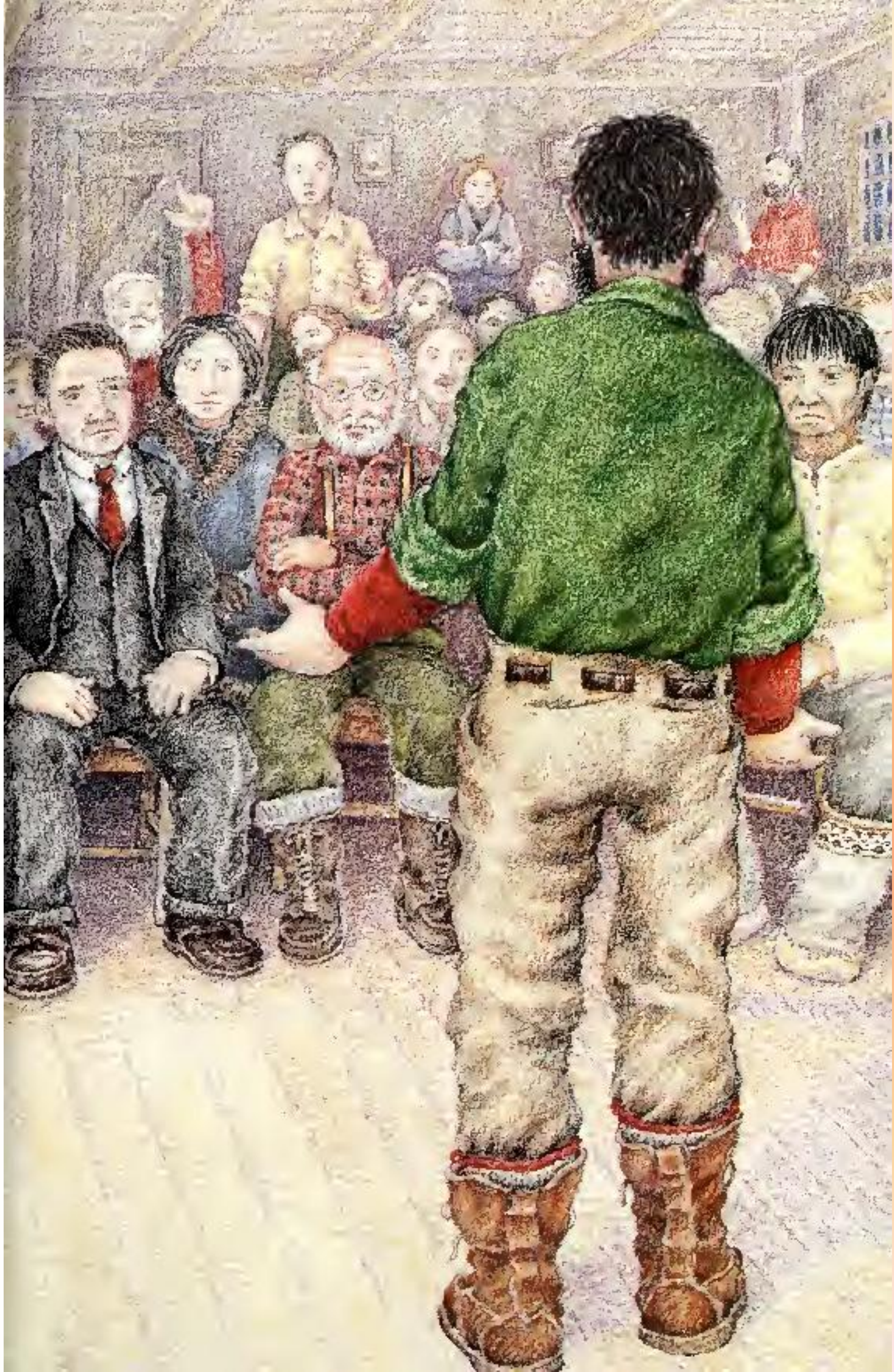
उससे कमरे में उत्साह की लहर दौड़ गई.

लोगों को दवा लाने का यह सबसे तेज़ तरीका लगा.

लेकिन डॉक्टर चिंतित थे.

"उससे दवा लाने में कम-से-कम पंद्रह दिन लगेंगे.

यह बहुत लंबा समय है. बहुत लंबा.”





शायद डॉक्टर सही थे.

लेकिन कोई और विकल्प नहीं था.

इसलिए मेयर ने रेडियो पर संदेश भेजा.

"कृपया मदद करें!" उन्होंने कहा.

"हमें अपने शहर को बचाने के लिए

सबसे अच्छे ड्राइवरों और कुत्तों की ज़रूरत है!"



गुन्नार ने मेयर को रेडियो पर सुना.

गुन्नार जानता था कि

उसके पास सबसे अच्छी कुत्तों की टीम थी

और सबसे अच्छा लीड कुत्ता भी.

बाल्टो, बच्चों के बचाव के लिए आएगा.



27 जनवरी, 1925 को

नोम तक की दौड़ शुरू हुई.

रिले में कुल इक्कीस, कुत्तों की टीमें थीं.

हर टीम अलग-अलग स्टॉप पर

इंतज़ार कर रही थी.



पहले ड्राइवर ने ट्रेन से दवा ली.

उसने उसे ठंड से

बचाने के लिए फर में लपेटा.

फिर उसने अपने कुत्तों को

जितनी जल्दी हो सका

दूसरे स्टॉप पर पहुँचाया.

उसने सही समय में अपनी यात्रा पूरी की.





लेकिन जल्द ही तेज़ हवा चलने लगी.

हवा और ठंडी हो गई.

फिर बर्फीला तूफ़ान आया!

वो अब तक का

सबसे भयानक तूफ़ान था.

फिर भी दौड़ जारी रही.

किसी तरह कुत्तों की टीम

अगले पड़ाव पर पहुँच गई.



एक टीम के दो कुत्ते, ठंड से मर गए.

फिर ड्राइवर ने खुद को स्लेज से जोड़ा.

उसने अपने बाकी कुत्तों को

तूफ़ान से बाहर निकलने में मदद की.



गुन्नार और बाल्टो

ब्लफ़ में अपने पड़ाव पर इंतज़ार कर रहे थे.

वे ब्लफ़ से पॉइंट सेफ्टी तक

31 मील दौड़ने वाले थे.

यह दौड़ की आखिरी मंजिल से

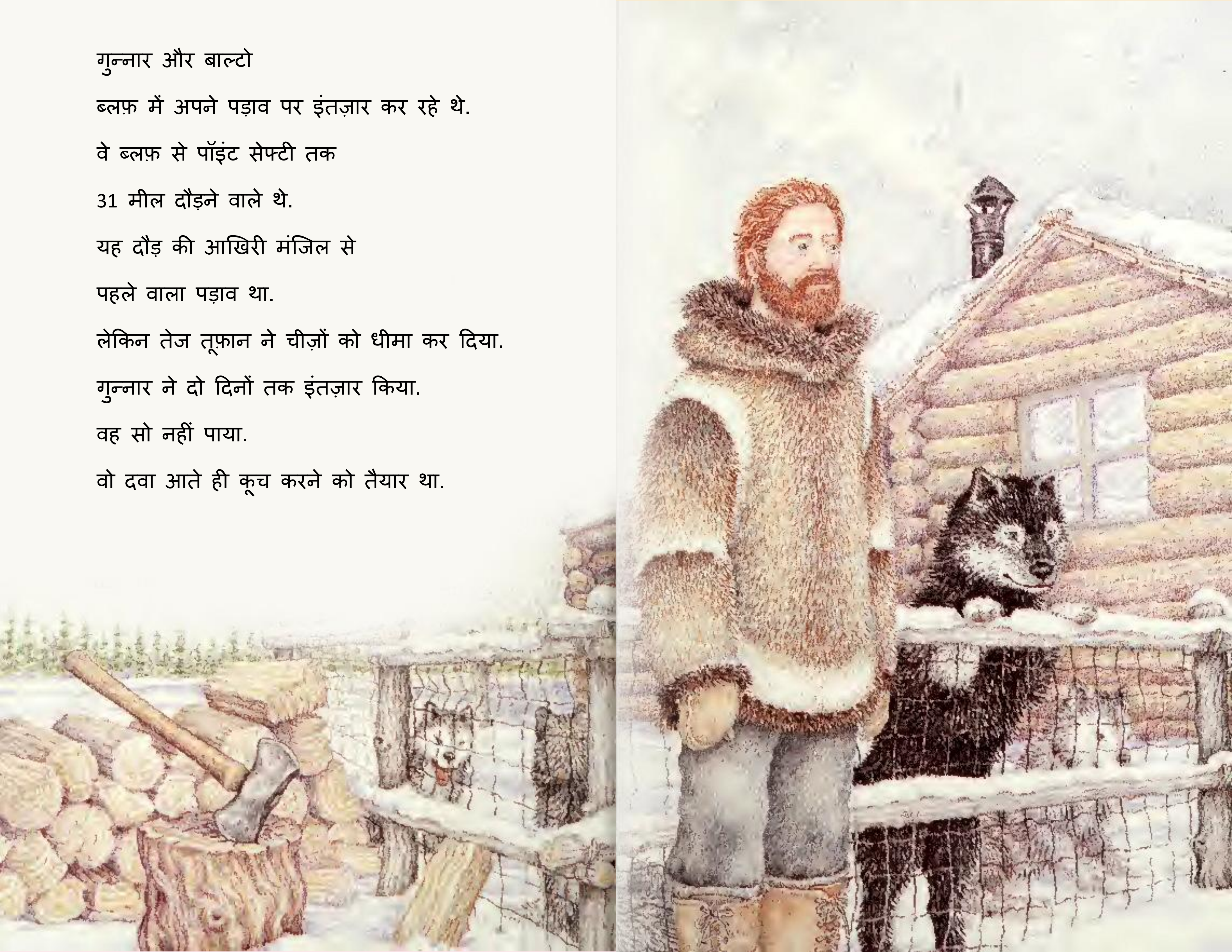
पहले वाला पड़ाव था.

लेकिन तेज तूफ़ान ने चीज़ों को धीमा कर दिया.

गुन्नार ने दो दिनों तक इंतज़ार किया.

वह सो नहीं पाया.

वो दवा आते ही कूच करने को तैयार था.





आखिरकार गुन्नार ने

कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनी.

दवा आ गई!

उसने दवा, एक छोटे से स्टोव

और थोड़े से भोजन को स्लेज पर रखा.

फिर उसने अपने कुत्तों को बाँधा.

बाल्टो गर्व से सबसे आगे खड़ा था.

गुन्नार ने अपना चाबुक फटकारा.

"मुश!" वह चिल्लाया.

"मुश!" का मतलब था "जाओ."

टीम बर्फीली रात में दौड़ी.



पहले तो टीम का समय अच्छा गुजरा.

लेकिन जल्द ही बर्फ के

ढेर ने रास्ता रोक दिया.

कुत्ते बर्फ में गर्दन तक धँस गए.

अब वे हिल नहीं पा रहे थे.

कुछ घबराने लगे.

लेकिन बाल्टो नहीं.

वह शांत रहा.

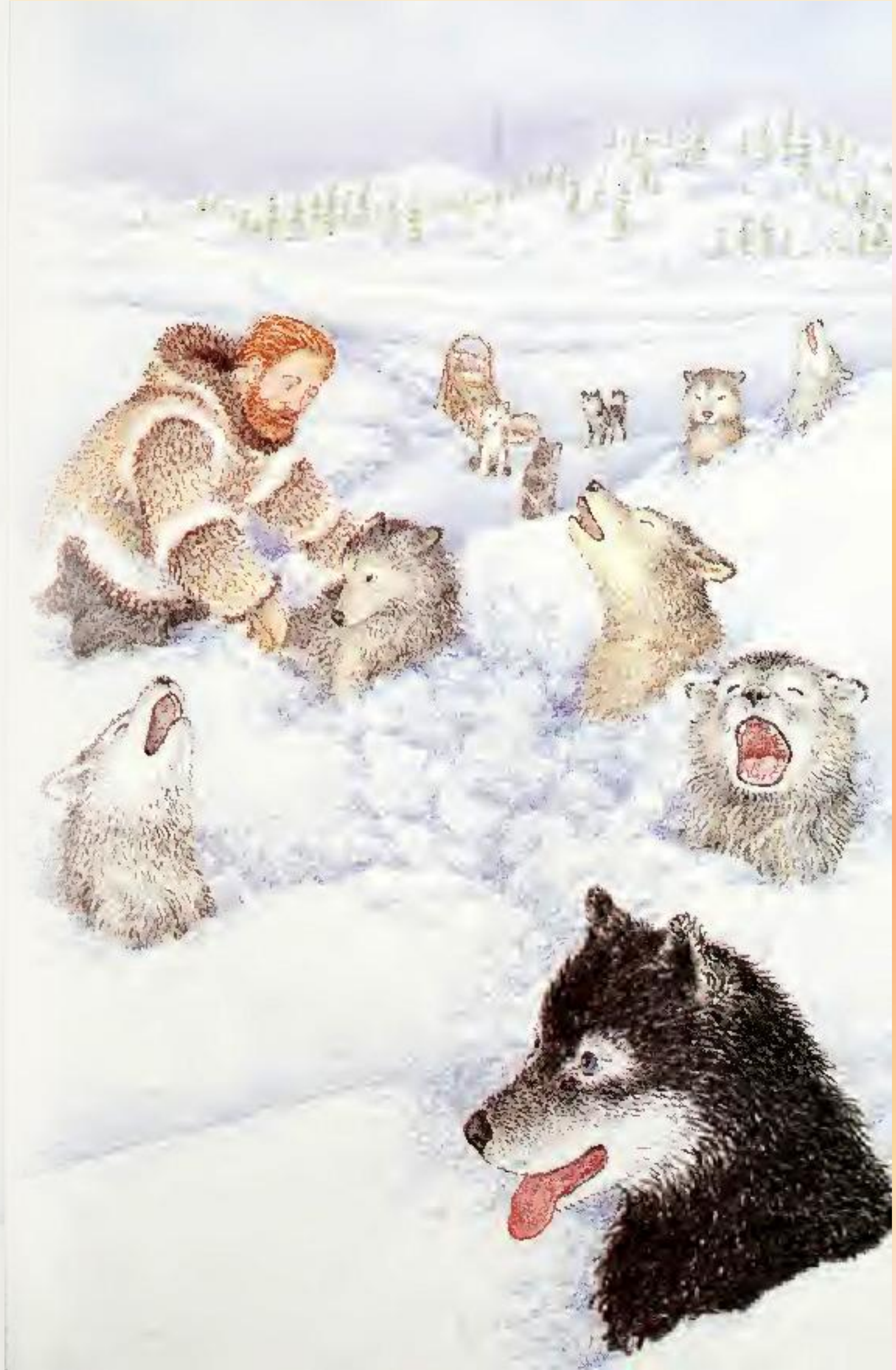
इससे दूसरे कुत्तों को मदद मिली

फिर गुन्नार ने उन्हें

बर्फ से बाहर निकाला.

और फिर दुबारा से टीम

अपने रास्ते पर चल पड़ी.

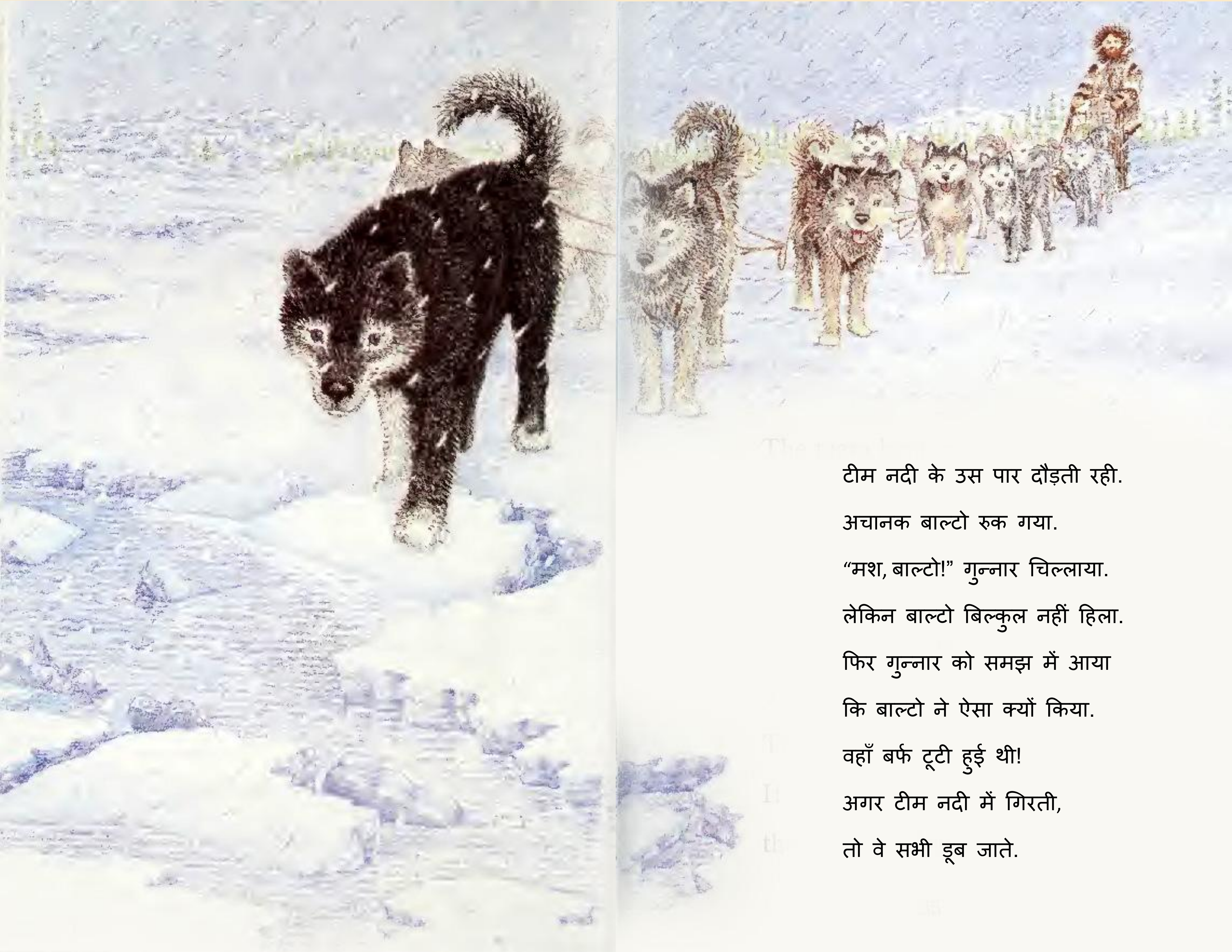


फिर टीम ने एक जमी हुई
नदी को पार किया.
कुत्ते और स्लेज
बर्फ पर फिसले, बड़ी तेजी से,
जिससे स्लेज आगे निकल गई.
गुन्नार ने उसे फिर से ऊपर उठाया.
लेकिन तब दवा कहीं गिर गई!





गुन्नार ने बेतहाशा दवा की तलाश की.
वह भारी बर्फ के बीच में
कुछ नहीं देख पा रहा था.
लेकिन आखिरकार उसे
दवा का पैकेज मिल गया.
उसने उसे वापस स्लेज पर रखा.



टीम नदी के उस पार दौड़ती रही.

अचानक बाल्टो रुक गया.

“मश, बाल्टो!” गुन्नार चिल्लाया.

लेकिन बाल्टो बिल्कुल नहीं हिला.

फिर गुन्नार को समझ में आया

कि बाल्टो ने ऐसा क्यों किया.

वहाँ बर्फ टूटी हुई थी!

अगर टीम नदी में गिरती,

तो वे सभी डूब जाते.

बाल्टो ने समय रहते ही गाड़ी रोक दी.

“चतुर बाल्टो!” गुन्नार ने उससे कहा.

तब उसने देखा कि बाल्टो के पैर गीले थे.

अगर वे जम जाते,

तो बाल्टो फिर कभी नहीं चल पाता.

गुन्नार ने जल्दी से बाल्टो को

स्लेज से अलग किया.

वह कुत्ते को बर्फ के

एक टुकड़े पर ले गया.

वहाँ गुन्नार ने बाल्टो के पंजों

को बर्फ से रगड़ा.

जल्द ही वे सूख गए.

बाल्टो एक बार फिर

दौड़ने के लिए तैयार था.



बाल्टो ने टीम को

दरार पड़ी बर्फ के चारों ओर घुमाया.

आखिरकार वे

फिर से ठोस जमीन पर पहुँचे.

क्या वे अभी भी पगडंडी पर थे?

गुन्नार को कुछ पता नहीं था.

बर्फ इतनी तेज़ थी कि

गुन्नार अपने हाथ तक

नहीं देख पा रहा था.





लेकिन बाल्टो इस पगडंडी पर

पहले भी कई बार दौड़ चुका था.

अब सबकुछ उस पर निर्भर था.

आखिरकार तूफ़ान थम गया.

गुन्नार ने पॉइंट सेफ्टी को

ठीक अपने सामने देखा.

"हमारे बाल्टो ने कर दिखाया!"

गुन्नार ने सोचा.

अब वह आग के पास

अपने हाथ गर्म करने के

बारे में सोच रहा था.

लेकिन पॉइंट सेफ्टी पर सभी लाइटें बंद थीं.

क्या अगला ड्राइवर गायब था?

गुन्नार को कुछ पता नहीं था.

और पता लगाने का समय भी नहीं था.

इसलिए गुन्नार और बाल्टो रुके नहीं.

वे कभी इतने थके हुए नहीं थे.

लेकिन वे रात भर नोम की ओर दौड़ते रहे.



अभी भोर होने से ठीक पहले का समय था.

आसमान चमकने लगा.

नोम शहर में हर कोई सो रहा था.

गुन्नार और उसकी टीम शहर में पहुँच गई.

उन्होंने अपना मिशन पूरा किया था!

बाल्टो इतना थक गया था

कि वो भौंक तक नहीं पा रहा था.

वे लगातार 20 घंटे से रास्ते पर थे.

उन्होंने 53 मील का सफर तय किया था!





गुन्नार दवा लेकर डॉक्टर के पास गया.

डॉक्टर हैरान रह गया.

से लगा कि दवा आने में 15 दिन लगेंगे.

लेकिन गुन्नार ने दवा

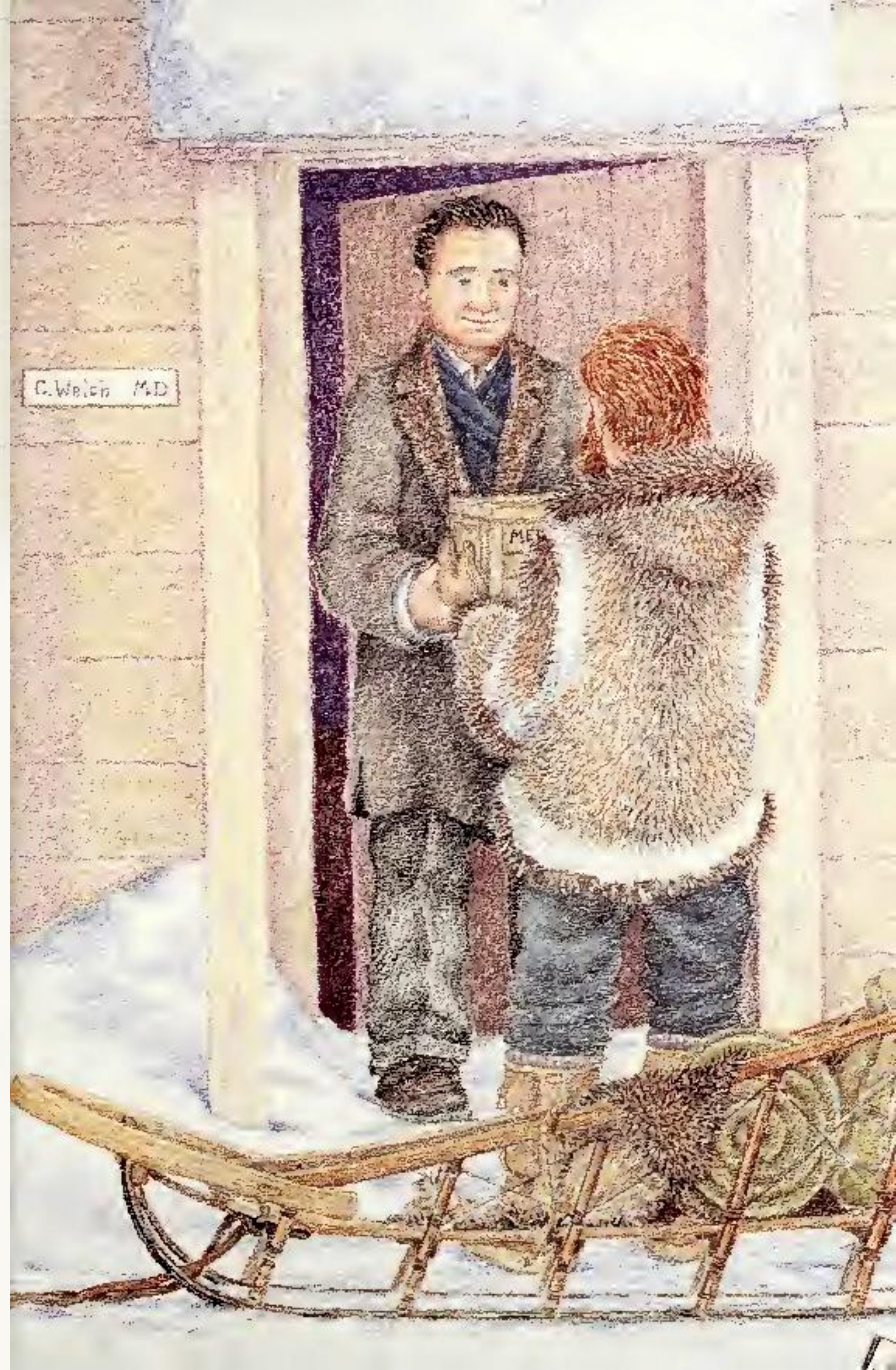
केवल साढ़े पाँच दिन में ही पहुँचा दी थी!

"धन्यवाद, गुन्नार!" डॉक्टर ने कहा.

"तुम हीरो हो!"

"नहीं, इसका हीरो बाल्टो है," गुन्नार ने कहा.

"मैं उसके बिना यह नहीं कर सकता था."



डॉक्टर ने तुरंत अपना काम शुरू कर दिया.

उसने सभी बीमार लोगों को दवा दी,

कुछ ही दिनों में वे ठीक हो गए.

नोम शहर बच गया.





पूरे अमेरिका में

लोगों ने बाल्टो की जय-जयकार की.

उन्होंने अखबार में

उसकी बहादुरी के बारे में पढ़ा.

बाल्टो दुनिया का सबसे मशहूर कुत्ता था.

एक साल बाद

न्यूयॉर्क शहर के लोगों ने

बाल्टो की एक मूर्ति स्थापित की.

यह अभी भी सेंट्रल पार्क में खड़ी है.

बहुत सारे उस बच्चे मूर्ति पर खेलते हैं.

वे बाल्टो को याद करते हैं,

जो अब तक का सबसे बहादुर कुत्ता था!



अंत